Course B.A Education, Part-III, Paper-7th (Educationsl thoughts and practice & Adult Education)
Prepared by : Dr. Meena Kumari
Topic-Educational philosophy of Gandhi

महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन

1. प्रस्तावना -
मोहनदास करमचंद गांधी भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख नेता तथा राष्ट्रपिता के रूप में विश्व में जाने जाते हैं। इनका दर्शन सत्य अहिंसा पर आधारित था । यह स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ब्रिटिश सत्ता से मुक्ति ,सत्य और अहिंसा के बल पर दिलाये थे।इसलिए विश्व में उनकी जन्म दिन 2 अक्टूबर को सत्य अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है।
महात्मा गांधी के विषय में आइंस्टाइन ने कहा था 'हजारों साल बाद आने वाली नस्लें यह शायद ही विश्वास कर पाएगी की हाड़ मांस का एक पुतला पृथ्वी पर इतना बड़ा बदलाव सत्य और अहिंसा के बल पर लाया था"।
2. महात्मा गांधी का दार्शनिक विचारधारा:-
गांधी जी का जीवन दर्शन आदर्शवादी तथा आध्यात्मिक विचारधारा पर आधारित था। भारत के आधुनिक दार्शनिक में इनको सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।इनका प्रमुख दार्शनिक सिद्धांत है सत्य ,अहिंसा ,निर्भयता और सत्याग्रह।
१) सत्य - गांधीजी के लिए सत्य और ईश्वर का अस्तित्व सामान था। वह सत्य का प्रयोग एक विस्तृत आयाम के लिए करते थे ।उन्होंने कहा था विचार में सत्य, भाषण में सत्य तथा कर्म में सत्यता होनी चाहिए।
२) अहिंसा - गांधी जी ने सत्य के एक सिद्धांत से एक स्वाभाविक परिणाम निकाला था अहिंसा क्योंकि सत्य और अहिंसा को एक दूसरे से अलग करना असंभव है !अहिंसा अर्थात हिंसा का विरोध तथा किसी भी स्तर पर किसी भी तरह के हिंसा का प्रयोग नहीं करना चाहे वह वाणी ही क्यों न हो ।
३) निर्भयता – अर्थात सभी प्रकारों की भय से मुक्ति ।गांधी जी ने लिखा है की निर्भरता से मनुष्य सभी बाहरी भय से मुक्त हो जाता है जैसे बीमारी का भय ,मृत्यु का भय,दरिद्रता का भय, प्रतिष्ठा खोने का भय प्रियजन की मृत्यु का भय, गलत कार्य करने का भय इत्यादि है।

४) सत्याग्रह - गांधीजी के अनुसार सत्याग्रह का अर्थ है सत्य पर बल देना, सत्य पर चलना! गांधीजी ने इसे आत्मबल के नाम से पुकारा है !सत्याग्रह के प्रयोग से प्रारंभिक स्तर पर यह खोज की जाती है कि अगर कोई व्यक्ति किसी बात को नहीं मानता है तो उसके विरोध में बल का प्रयोग ना करें इ!सके विपरीत उसे धैर्य और शांति से उनको गलत मार्ग से हटाना चाहिए! इस प्रकार इस सिद्धांत का अर्थ है कि विरोधी को कष्ट देकर नहीं वरन अपने आप को कष्ट देकर सत्य का समर्थन करना!

(3)गांधीजी की शैक्षिक विचारधारा(Educational Thought of Gandhiji)

गांधीजी बच्चों के सर्वांगीण विकास से बल दिए थे! उन्होंने यह अनुभव करके बताया था कि सामाजिक ,राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक प्रगति का आधार शिक्षा है! गांधी जी के द्वारा प्रतिपादित शिक्षा दर्शन में के महत्वपूर्ण बिंदु निम्नलिखित हैं-

- शिक्षा के द्वारा बच्चों के मानवीय गुणों का विकास करना चाहिए।
- संपूर्ण देश में 7 से 14 वर्ष तक निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा दी जानी चाहिए।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
- शिक्षा बच्चों के अध्यात्मिक मानसिक और शारीरिक शक्तियों को विकसित करें।
- समस्त शिक्षण प्रक्रिया जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में किया जाना चाहिए।
- शिक्षा जो बच्चों को बेरोजगारी से सुरक्षा कर सके।
- शिक्षा मानव के व्यक्तित्व, शरीर व मस्तिष्क और आत्मा का सामंजस्य पूर्ण विकास कर सके।
- शिक्षा का संबंध लाभप्रद दस्तकारी शिक्षण से प्रारंभ होनी चाहिए और जिस समय से उसका प्रशिक्षण प्रारंभ हो उसी समय से उसे उत्पादन करने के योग्य बनाना चाहिए।
- बच्चों को अपना ज्ञान सक्रिय रूप से प्राप्त करना चाहिए और उसका प्रयोग सामाजिक वातावरण को समझने तथा योगदान करने में करना चाहिए।
- शिक्षा को विद्यालय के सभी बच्चों की शक्तियों का संबंधित समुदाय के हित के अनुसार विकास करना चाहिए ।
- गांधीजी के शिक्षा दर्शन को बुनियादी शिक्षा के नाम से जाना जाता है ।बुनियादी शिक्षा को लागू करने के पीछे गांधीजी के निम्नलिखित उद्देश्य थे:-
- बच्चे का आदर्श नागरिकबनाना ।
- सांस्कृतिक दृष्टिकोण का विकास।
- बच्चों का सर्वांगीण विकास करना ।
- आर्थिक दृष्टिकोण का विकास ।
- बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना।
- सबके लिए शिक्षा।
- सर्वोच्च समाज की स्थापना।

बुनियादी शिक्षा का स्वरूप बुनियादी शिक्षा का स्वरूप इस प्रकार है :-

- 7 वर्षों की शिक्षा अवधि हो जिसमें 6 से 14 वर्ष के बालक बालिकाओं को निशुल्क दी जाए।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होगीअंग्रेजी शिक्षा नहीं दी जाएगी ।
- शिक्षा शिल्प पर आधारित हो सके तथा यह सिर्फ स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप होंगे।
- बच्चे अच्छे शिल्पी हो सकेंगे ।
- उनके द्वारा निर्मित सामानों को बेचा जाएगा इससे विद्यालय का खर्च चलेगा ।
- शिल्प की शिक्षा यांत्रिक विधि से न देकर इस प्रकार दी जाएगी कि बालक उसके सामाजिक और वैज्ञानिक महत्व से परिचित हो सकेंगे।

- हस्त कौशल (क्राफ्ट) -चमड़े का काम, कटाई बुनाई ,लकड़ी तथा कागज का काम और बागवानी।
- भाषा- राष्ट्रभाषा हिंदी के साथ-साथ देश की विभिन्न भाषाएं तथा हिंदुस्तानियों की मात्र भाषाएं
- गणित- रेखा गणित ,अंकगणित ,बीजगणित तथा नाप जोख संबंधित तथ्य ।
- सामाजिक अध्ययन- इतिहास, भूगोल समाजशास्त्र एवं नागरिक शास्त्र का अध्ययन।
- कला- चित्रण, संगीत तथा पेटिग।
- शरीर शिक्षा- ड्रिल ,व्यायाम, खेलकूद आदि क्रियाएं।
- आचरण शिक्षा- समाज सेवा , नैतिकशिक्षा एवं अन्य क्रियाएं

(5) शिक्षण पद्धतियां-

गांधीजी शारीरिक अंगों का विवेकपूर्ण प्रयोग करके सीखने पर बल देते हैं !उनका कथन है कि मेरा विश्वास है कि मस्तिष्क की सच्ची शिक्षा ,शारीरिक अंगों द्वारा यथा आंख ,नाक ,कान आदि के उचित अभ्यास और शिक्षण से प्राप्त की जा सकती है! दूसरे शब्दों में बच्चों के शारीरिक अंगों का विवेकपूर्ण प्रयोग उसके मस्तिष्क का विकास करने के लिए अच्छा और तेज तरीका है !इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए लिखने के पहले पढ़ना सिखाना तथा वर्णमाला के अक्षर के पहले उससे संबंधित धारणा बनाना चाहते थे।गांधी जी की विभिन्न विधियों में सहयोगी

क्रियाएं ,नियोजन, यथार्थता पहल कदमी और व्यक्तिगत उत्तरदायित्व पर बल दिया है !उन्होंने करके सीखना ,अनुभव द्वारा सीखना तथा सीखने की प्रक्रिया में समन्वय पर जोर दिए थे।

(6) विद्यालय -

गांधीजी के अनुसार विद्यालय ऐसी कर्मशालाएँ होनी चाहिए, जहां अध्यापक सेवा भाव तथा पूर्ण निष्ठा के साथ शिक्षण कार्य करें और उनके तथा विद्यार्थियों के संयुक्त प्रयास से उनमें उत्पादन कार्य की क्षमता का विकास हो सके ! छात्र आर्थिक दृष्टिकोण से आत्मनिर्भर हो सकें !वह विद्यालय को सामुदायिक केंद्र बनाने पर भी बल देते थे! उनका कहना था कि विद्यालय में विभिन्न समुदायिक कार्य होनी चाहिए और यहां समुदाय के लोगों को भी कार्य करने की सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिए !रात्रि पाठशाला लगाकर प्रौढ़ शिक्षा की व्यवस्था भी की जानी चाहिए !इस प्रकार विद्यालय और समुदाय को परस्पर विभिन्न क्रियाकलापों में सहयोग करना चाहिए!उन्होंने यह भी कहा था कि विद्यालय का वातावरण इस प्रकार का होना चाहिए कि छात्रों के चरित्र का समुचित विकास हो सके! वे सुचारू रूप से अपना कार्य कर सकें!

(7) शिक्षक

गांधी जी ने शिक्षक के संबंध में बताया है कि शिक्षक को चाहिए कि छात्र को अपने व्यक्तित्व से प्रभावित करें!शिक्षकों का कार्य कक्षा के बाहर भी हैं !उन्होंने अत्यंतस्पष्ट शब्दों में लिखा है -मैंने अनुभव किया है कि शिक्षक का कार्य कक्षा की अपेक्षा कक्षा के बाहर अधिक है ! वर्तमान दैनिक दिनचर्या के जीवन में जहां अध्यापक और प्रोफेसर पारिश्रमिक के लिए अध्यापन कार्य करते हैं, छात्रों को कक्षा के उपरांत समय नहीं दे पाते हैं! आज के छात्रों के चरित्र और व्यक्तित्व के विकास में सबसे बड़ा रोड़ा यही है !इसलिए शिक्षकों को कक्षा के बाहर इस प्रकार व्यवहार करना चाहिए कि छात्रों में सद्गुणों का विकास हो और वह समस्या का समाधान ढूंढने में समर्थ हो सके !इसलिए उन्हें सहिष्णु, उदारचेता और धैर्यवान होना चाहिए! उनका कथन है कि शिक्षक को बालक का मित्र, परामर्शदाता और पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करना चाहिए।

(8) शिक्षार्थी -

गांधीजी बालकेंद्रित शिक्षा में विश्वास करते थे और वे छात्रों को शिक्षण प्रक्रिया के केंद्र में मानते थे। गांधीजी के अनुसार छात्रों को अनुशासन एवं ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए!बालक की शिक्षा का प्रारंभ माता के पेट से होनी चाहिए ताकि छात्र के चरित्र को उज्जवल बनाने में माता-पिता के चरित्र की भी भूमिका हो । गांधीजी विद्यार्थियों के लिए सदाचार को आवश्यक मानते थे और विद्यार्थियों को चारित्रिक,बौद्धिक औरआध्यात्मिक शक्तियों से भरपूर होने की बात की है ।उनके अनुसार छात्रों में उच्श्रृंखलता की भावना नहीं होनी चाहिए !विद्यार्थियों को स्वतंत्र एवं अच्छे वातावरण में बिना किसी रोक-टोक के शिक्षा प्राप्त करना चाहिए।विद्यार्थियों को अनुशासित ही नहीं जिज्ञासु, समाज एवं देश सेवी और अहिंसावादी होना चाहिए। गांधी जी को छात्रों की शक्ति में असीम आस्था थी और स्वतंत्रता संग्राम में उनकी प्रेरणा से छात्रों ने महान योगदान दिया था ।गांधी जी का विचार है कि छात्रों को आत्मनिर्भर तथा स्वावलंबी भी होना चाहिए तथा अपने प्रत्येक कार्यों को स्वयं करना चाहिए।

(9).निष्कर्ष-

गांधीजी के शिक्षा दर्शन से के विवेचना से यह पता चलता है की वह बहुत दूरदर्शी थेतथा देश सेवा की भावना के वह देश हित के लिए ही अपने जीवन को न्योछावर कर दिए। भारत जैसे गरीब देश में शिक्षा में वर्धा शिक्षा योजना तथा उत्पादन क्रिया का सिद्धांत बहुत ही महत्वपूर्ण है। वस्तुतः भारत जैसे देश के लिए इससे अच्छी योजना की कल्पना नहीं की जा सकती है।